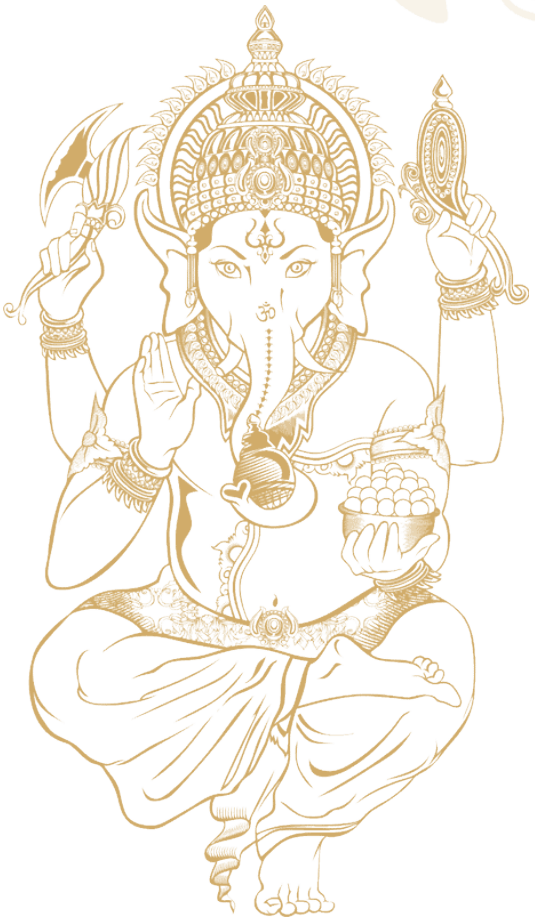

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
12-13/07/2000 :	जन्म तिथि	: 31/01/2002
बुध-गुरुवार :	दिन	: गुरुवार
घंटे 04:16:00 :	जन्म समय	: 09:45:00 घंटे
घटी 56:53:01 :	जन्म समय(घटी)	: 06:39:12 घटी
India :	देश	: India
Hathras :	स्थान	: Hathras
27:36:00 उत्तर :	अक्षांश	: 27:36:00 उत्तर
78:02:00 पूर्व :	रेखांश	: 78:02:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:17:52 :	स्थानिक संस्कार	: -00:17:52 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
05:30:47 :	सूर्योदय	: 07:05:19
19:15:40 :	सूर्यास्त	: 17:57:33
23:51:37 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:52:55

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 15वर्ष 11मा 12दि		09:33:57	मिथु	लग्न	मीन	08:56:07	शुक्र 12वर्ष 4मा 21दि	
शुक्र		27:00:02	मिथु	सूर्य	मक	17:13:23	चन्द्र	
26/06/2023		17:29:22	वृश्चि	चंद्र	सिंह	18:24:22	22/06/2020	
26/06/2043		23:40:54	मिथु	मंगल	मीन	15:00:00	23/06/2030	
शुक्र	25/10/2026	17:25:06	मिथु व	बुध व	मक	09:39:03	चन्द्र	23/04/2021
सूर्य	25/10/2027	08:41:01	वृष	गुरु व	मिथु	13:08:48	मंगल	22/11/2021
चन्द्र	25/06/2029	05:39:54	कर्क	शुक्र	मक	21:13:19	राहु	23/05/2023
मंगल	25/08/2030	03:58:51	वृष	शनि व	वृष	14:12:30	गुरु	21/09/2024
राहु	25/08/2033	00:46:24	कर्क व	राहु व	मिथु	02:22:16	शनि	23/04/2026
गुरु	25/04/2036	00:46:24	मक व	केतु व	धनु	02:22:16	बुध	22/09/2027
शनि	26/06/2039	26:05:12	मक व	हर्ष	कुंभ	00:09:33	केतु	22/04/2028
बुध	25/04/2042	11:43:11	मक व	नेप	मक	14:40:41	शुक्र	22/12/2029
केतु	26/06/2043	16:40:47	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	23:06:01	सूर्य	23/06/2030

लग्न-चलित

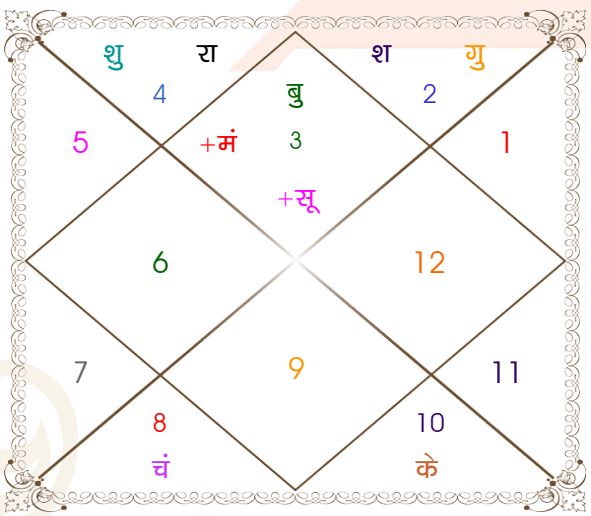

लग्न-चलित

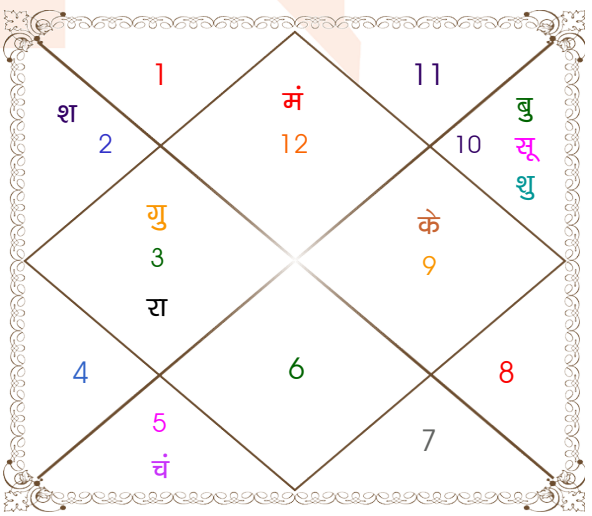

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

Mr. का वर्ग सर्प है तथा Ms. का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Ms. कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।